ISSN 0973-2616

प्रगति, विकास और आशा

सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 10 अंक 12 www.csir.res.in सितम्बर 2022

सीएसआईआर, भारत और बीसीएसआईआर, बांग्लादेश के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद, भारत और बांग्लादेश के बीच एस एंड टी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) भारत और बांग्लादेश वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (बीसीएसआईआर) ने एक सहयोग समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए और 6 सितंबर 2022 को नई दिल्ली में भारत

के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी और बांग्लादेश की माननीय प्रधान मंत्री, सुश्री शेख हसीना की उपस्थिति में इसका आदान-प्रदान किया।

भारत और बांग्लादेश के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग में एक महत्वपूर्ण मील के पत्थर के रूप में, भारत के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और बांग्लादेश वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (बीसीएसआईआर) के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने हेतु एक व्यापक ढांचा स्थापित करने के लिए संपन्न हुआ।

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी और बांग्लादेश की माननीय प्रधान मंत्री, सुश्री शेख हसीना की उपस्थिति में नई दिल्ली में दोनों संस्थानों के प्रमुखों द्वारा हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन का आदान–प्रदान किया गया।

वर्ष 1991 से, सीएसआईआर और बीसीएसआईआर/डीएसआईआर, भारत सरकार और बांग्लादेश के विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रभाग (अब विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय) के बीच वर्ष 1991 प्रोटोकॉल के तहत एस एंड टी कार्यक्रमों के माध्यम से सहयोग कर रहे हैं। तब से कई विषयगत संयुक्त कार्यशालाओं और प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के आयोजन के साथ पांच कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक निष्पादित किया गया है।

सहयोग को और बढ़ावा देने और इसके दायरे को बढ़ाने के लिए, सीएसआईआर और बीसीएसआईआर ने इन राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों के बीच वैज्ञानिक संबंधों को फिर से जीवंत करने के लिए एक सहयोगात्मक समझौता ज्ञापन समाप्त करने का निर्णय लिया जो देशों के मध्य दृष्टि और मिशन साझा करते हैं।

2022 एमओयू के तहत सहयोग एस एंड टी सूचना, सामग्री और वैज्ञानिकों/शोधकर्ताओं/विद्वानों के आदान–प्रदान के माध्यम से निष्पादित किया जाएगा संयुक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संगोष्ठी/कार्यशालाएं और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संयुक्त अनुसंधान परियोजनाएं एक दूसरे की प्रमुख सुविधाओं का उपयोग प्रौद्योगिकी साझेदारी/हस्तांतरण पहचान किए गए उद्योग क्षेत्रों के विकास के लिए क्षमता विकास और तकनीकी सहायता और सेवाओं के विस्तार के लिए संस्थानों को जोड़ना इस समझौते का मुख्य उद्देश्य है।

सीएसआईआर-निस्पर ने फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0 का आयोजन किया

राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) नई दिल्ली, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की एक घटक प्रयोगशाला है जो नीति अनुसंधान और विज्ञान संचार संबंधी अध्ययनों के अपने अधिदेशों के साथ राष्ट्र की सेवा करती है।

भारत सरकार के 'फिट इंडिया मिशन' को मजबूत करने के लिए, सीएसआईआर -निस्पर ने 2-31 अक्टूबर 2022 के दौरान ''फिट इंडिया'' गतिविधियों' का आयोजन किया। इस प्रयास के तहत कई खेल गतिविधियां निर्धारित की गई।

डॉ. सुजीत भट्टाचार्य, प्रभारी निदेशक, सीएसआईआर -निस्पर ने 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0' को झंडी दिखाकर रवाना किया।

सीएसआईआर-निस्पर ने अपने स्टाफ सदस्यों, प्रोजेक्ट एसोसिएट, रिसर्च इंटर्न, एसीएसआईआर छात्रों, आउटसोर्स जनशक्ति, दोस्तों और परिवार के सदस्यों के लिए 3 किलोमीटर की दूरी की 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0' का आयोजन किया।

सीएसआईआर-निस्पर के प्रभारी

निदेशक डॉ. सुजीत भट्टाचार्य ने फिट इंडिया फ्रीडम रन को नई दिल्ली के पूसा परिसर से सुबह 10:30 बजे हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर डॉ. भट्टाचार्य का कहना था कि फिट इंडिया रन स्वास्थ्य और फिटनेस के लिए संस्थान के स्टाफ सदस्यों और अन्य मानव संसाधनों को जागरूक करने का एक अभिनव प्रयास है।

फिट इंडिया मिशन के लिए सीएसआईआर-निस्पर समिति के अध्यक्ष श्री अश्वनी कुमार ब्राह्मी ने फिट इंडिया फ्रीडम रन के सभी प्रतिभागियों को सरकार के संबंधित दिशा निर्देशों के बारे में जानकारी दी। संस्थान की इस गतिविधि में डॉ. मोहम्मद रईस, डॉ नरेश कुमार, डॉ एल पुलाम्ते, डॉ बी एल गर्ग, डॉ संध्या वाकडीकर, डॉ मधुलिका भाटी, डॉ सुमन रे, डॉ पुष्पांजलि त्रिपाठी, डॉ शिव नारायण निषाद , डॉ अरविंद मीणा, डॉ मनीष मोहन गोरे, डॉ मेहरवान, डॉ परमानंद बर्मन (सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक), श्री राजेश कुमार सिंह रोशन, प्रशासन नियंत्रक, श्री अजय कुमार, वित्त और लेखा नियंत्रक, श्री पंकज गोस्वामी, प्रशासनिक अधिकारी और संस्थान के अन्य स्टाफ सदस्यों ने इस फिट इंडिया रन में सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रतिभागियों की संख्या 200 से अधिक थी। सीएसआईआर-निस्पर खेल गतिविधियों में बहुत सक्रिय है और यह आंतरिक खेल गतिविधियों के साथ–साथ शांति स्वरूप भटनागर मेमोरियल टूर्नामेंट (एसएसबीएमटी) में भी नियमित रूप से भाग लेता है।

fQV bfM;k ÝhMe ju esa lh, lvkbZvkj-fuLij dk LVkQ lnL;

एसएसबीएमटी सीएसआईआर स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड द्वारा एक प्रतिबद्ध सीएसआईआर परिवार बनाने और सभी बाधाओं के खिलाफ उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए टीम भावना, नेतृत्व और उत्साह पैदा करने के लिए विभिन्न सीएसआईआर संस्थानों की भागीदारी को एक साथ लाने के लिए बनाया गया एक मंच है। एसएसबीएमटी के तहत क्रिकेट, वॉलीबॉल, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, शतरंज, कैरम और ब्रिज के खेलों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। सीएसआईआर-निस्पर एसएसबीएमटी का एक सक्रिय सदस्य है।

सीएसएमसीआरआई, भावनगर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

सीएसआईआर-केन्द्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई), भावनगर में केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसरण में इस वर्ष की थीम "भ्रष्टाचार मुक्त भारत-विकसित भारत" के अंतर्गत सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 का 31 अक्टूबर से 06 नवंबर, 2022 तक आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ 31 अक्टूबर को संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री सुभाष चन्द्र द्वारा सभी स्टाफ सदस्यों को सत्यनिष्ठा

प्रतिज्ञा एवं राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ दिला कर किया गया तथा सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 के सबंध में भारत के माननीय राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों से प्राप्त संदेशों को भी पढ़ा गया।

सप्ताह भर विभिन्न प्रतियोगिताएं, क्विज एवं व्याख्यान आदि आयोजित किए गए। 01 नवंबर को प्रचार वाक्य (स्लोगन) प्रतियोगिता, 02 नवंबर को निबंध लेखन प्रतियोगिता, 04 नवंबर को भ्रष्टाचार एवं सतर्कता विषय पर प्रश्नोतरी (क्विज) का आयोजन किया गया। 2 नवंबर को प्रशासन नियंत्रक श्री सुभाष चन्द्र द्वारा "आरटीआई अधिनियम-2005 एक सिंहावलोकन एवं भ्रष्टाचार रोकने हेतु एक हथियार" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया जिसमें कार्यालयीन कार्यों के विभिन्न क्षेत्रों में सतर्क रहने की आवश्यकता पर बल दिया गया। 03 नवंबर को अनुभाग अधिकारी, श्री नृपेन्द्र चंडालिया (भंडार एवं क्रय) द्वारा "सही मांगपत्र का आकलन एवं चयन की आवश्यकता" विषय पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। 04 नवंबर को डॉ. रंजन एस कटोच, आईएएस (सेवानिवृत) एवं आईईएम (सीएसआईआर) ने "भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत" विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान दिया। संस्थान के निदेशक, डॉ कन्नन श्रीनिवासन ने अपने सम्बोधन में संस्थान के सभी कर्मचारियों को जागरूक एवं सदैव सतर्क रहने का आह्वान किया। उन्होने कहा कि बदलते परिवेश में जहां ऑनलाइन का चलन बढ़ा है वहीं इससे जुड़ी सतर्कता की अवश्यकता भी बढ़ी है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन में अनुभाग अधिकारी श्री गौरवेंद्र शुक्ला, श्री संजय चौहान, श्री सुनील दलाल तथा प्रशासन से जुड़े अन्य कर्मियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। सप्ताह भर चले आयोजनों में संस्थान के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने उल्लास के साथ भाग लिया।

सीएसआईआर-सीरी में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में कार्यशाला का आयोजन

आजादी का अमृत काल के अंतर्गत देश भर में आयुर्वेद@2047 कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। आयुष मंत्रालय, भारत सरकार तथा सीएसआईआर मुख्यालय के दिशा निर्देशानुसार सीएसआईआर-सीरी में 7वें राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में 14 अक्टूबर, 2022 को आयुर्वेद पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में डॉ वी बी कुमावत, अनुसंधान अधिकारी (आयुर्वेद), महाराणा शेखाजी क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर

(MSRARI, Jaipur) ने रोचक एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। संस्थान के मुख्य सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों के अलावा अन्य सहकर्मी भी उपस्थित थे।

आयुष मंत्रालय द्वारा आयुर्वेद@2047 कार्यक्रम के लिए केंद्रीय विषय 'हर दिन हर घर आयुर्वेद' रखा गया है। इस कड़ी में संस्थान में आयोजित कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने की। डॉ कर्माकर ने आमंत्रित अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने कहा कि देशभर में विगत 12 सितंबर से 23 अक्टूबर 2022 तक आयुर्वेद@2047 महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। स्वदेशी चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कोविड से लड़ने में आयुर्वेद एवं अन्य स्वदेशी पद्धतियों की भूमिका को रेखांकित किया।

'आयुर्वेद, जीवन शैली तथा आहार नियम' विषयक अपने सारगर्भित व्याख्यान में मुख्य अतिथि डॉ वी बी कुमावत ने कहा कि आयुर्वेद स्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ रखने और अस्वस्थ व्यक्ति की चिकित्सा पद्धति का नाम है। अनुशासित दिनचर्या को अच्छे स्वास्थ्य का आधार बताते हुए उन्होंने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए आदर्श आहार के साथ–साथ भोजन एवं आहार का समय भी निश्चित होना अनिवार्य है। इस अवसर पर उन्होंने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक बातों पर भी प्रकाश डाला। व्याख्यान के उपरांत उपस्थित सहकर्मियों ने आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य पर प्रश्न पूछे और विशेषज्ञ अतिथियों ने उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया।

डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि डॉ वी बी कुमावत एवं उनके सहयोगी डॉ सुहास चौधरी को संस्थान की ओर से स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने धन्यवाद ज्ञापित किया। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि भगवान धन्वंतरि आयुर्वेद के जनक थे। संक्षिप्त संबोधन में उन्होंने राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाने की पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला।

इससे पूर्व कार्यक्रम का संचालन करते हुए आयोजन के संयोजक श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने सभागार में उपस्थित सभी सहकर्मियों को मुख्य अतिथि डॉ वी बी कुमावत का औपचारिक परिचय दिया।

चिकित्सा शिविर एवं आयुर्वेद प्रदर्शनी सायंकालीन सत्र में संस्थान परिसर के गाँधी हॉल में चिकित्सा शिविर एवं आयुर्वेद प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। चिकित्सा शिविर एवं आयुर्वेद प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने किया। चिकित्सा शिविर एवं आयुर्वेद प्रदर्शनी में 300 से अधिक लोगों ने चिकित्सकीय परामर्श और दवाएं प्राप्त कीं। लाभार्थियों ने प्रदर्शनी एवं चिकित्सा शिविर की सराहना की और चिकित्सा परामर्श एवं अन्य सुविधाओं के लिए सीरी प्रबंधन सहित महाराणा शेखाजी क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर की टीम के प्रति आभार व्यक्त किया।

डॉ वी बी कुमावत, अनुसंधान अधिकारी एवं डॉ सुहास चौधरी सहित उनकी टीम ने संस्थान में प्रदत्त सभी सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं के लिए सीएसआईआर-सीरी के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया एवं प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण के प्रति आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर-केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान के शोधकर्ताओं ने मधुमेह रोगियों के लिए जूते विकसित किए

मधुमेह और पैरों में दर्द? दुर्भाग्य से, यह असामान्य नहीं है। मधुमेह एक पुरानी बीमारी है जो गुर्दे, आंख, पैर और हृदय को प्रभावित करती है। बढ़ा हुआ रक्त शर्करा स्तर संवेदनशील तंत्रिकाओं को परेशान करता है और बड़ी और छोटी रक्त वाहिकाओं में गड़बड़ी का कारण बनता है।

विशेष रूप से छोटी रक्त वाहिकाओं का विघटन, एक प्रमुख कारक है जो मधुमेह ग्रसित पैर को विकसित करता है। यह अनुमान लगाया गया है कि 50% केस संबंधी से अधिक निचले छोरों के विच्छेदन मधुमेह से जुड़े हुए हैं। विश्व में मधुमेह रोगियों की सबसे अधिक संख्या भारत में है।

मधुमेह ग्रसित पैर की जटिलताओं से जुड़ी स्वास्थ्य देखभाल लागत और उत्पादकता की हानि बहुत अधिक है और इसे रोकने के लिए सभी प्रयासों की आवश्यकता है। जूते जो या तो अनुपयुक्त हैं या पर्याप्त रूप से उपयोग नहीं किए जाते हैं, या जूते की कमी पैर के अल्सर के परिणामस्वरूप आघात के सबसे आम कारण हैं। नियमित पैर निरीक्षण, पैरों की देखभाल और उचित जूते पहनने से मधुमेह के पैर के अल्सर को रोका जा सकता है।

भारतीय परिस्थितियों में फुटवियर की उपयुक्तता पर शोध ने सीएसआईआर-केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान (सीएलआरआइ) को मैसर्स एमवी डायबिटीज हॉस्पिटल एंड डायबिटीज रिसर्च सेंटर, चेन्नई के साथ मिलकर एक विशेष फुटवियर विकसित करने के लिए प्रेरित किया, जिसे डायस्टेप कहा जाता है, ताकि डायबिटिक फुट की जटिलताओं को कम किया जा सके और जीवन की बेहतर गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके। डायस्टेप मधुमेह के रोगियों के लिए एक चिकित्सीय खुला फुटवियर है जो तले मे पैर के दबाव के असामान्य वितरण को कम करता है। मधुमेह के पैर के जोखिम वाले मरीजों को एक पूर्ण खुले जूते प्रदान किए जाते हैं, जिसमें चुनिंदा टॉपसोल, धूप में सुखाना और उचित रूप से चयनित सामग्री से बने तल के तलवे शामिल होते हैं।

थेराप्यूटिक फुटवियर में नरम चमड़ा होता है, जोकि पॉलीयूरेथेन (पीयू) से बना एक यूनिट है, तथा जो अतिरिक्त गहराई के साथ अधिक प्रभावी दबाव वितरण के लिए बड़ा क्षेत्र प्रदान करता है और बेहतर पकड़ और कर्षण के लिए विशेष चलने वाला आउटसोल होता है।

डिजाइन किए गए फुटवियर ने व्यापक रोगी परीक्षणों के साथ अपनी प्रभावकारिता स्थापित की है। इसी लिए रोगियों का सावधानीपूर्वक चयन किया गया था और एक समायोजित चप्पल गढ़ा गया था। बायोमेकेनिकल स्ट्रेस को दूर करने के लिए फुटवियर को विशेष रूप से व्युत्पन्न रॉकर बॉटम तलवों से बनाया गया और इसके दबाव में कमी के लिए परीक्षण किया गया। विकसित फुटवियर की प्रभावशीलता की जांच सदमे को कम करने, पैर की दुर्बलता को रोकने के साथ–साथ पहनने वाले को आराम प्रदान करने और पैर को जोखिम के अगले उच्च स्तर तक बढ़ने से रोकने के लिए की गई थी।

डायस्टेप को 30 अक्टूबर 2018 (पेटेंट संख्या302551) पर पेटेंट कराया गया था। जूते बनाने की तकनीक को मेसर्स एम वी हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड को हस्तांतरित किया जा रहा है।

सीएसआईआर-एनपीएल के तकनीकी अधिकारी को इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) का ''आईईआई यंग इंजीनियर्स अवार्ड'' प्राप्त हुआ

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला नई दिल्ली के तकनीकी अधिकारी श्री अनीश महावीर भार्गव को वर्ष 2022–23 के लिए इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) का ''आईईआई यंग इंजीनियर्स अवार्ड'' प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उनके योगदान को मान्यता प्रदान करता है।

श्री भार्गव ने वर्ष 2016 में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से एम.टेक की डिग्री प्राप्त की है। इससे पहले, उन्होंने बी.ई. एसी पाटिल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, मुंबई विश्वविद्यालय से डिग्री और गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक मुंबई से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया। वर्तमान में वे सेंटर फॉर एप्लाइड रिसर्च इन इलेक्ट्रॉनिक्स, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली से पीएचडी भी कर रहे हैं। वे सीएसआईआर-एनपीएल में क्वांटम वोल्टेज और क्वांटम नैनो-फोटोनिक्स मेट्रोलॉजी से संबंधित विभिन्न मेट्रोलॉजिकल और अनुसंधान सुविधाओं की स्थापना में शामिल रहे हैं। मैट्रोलॉजी से संबंधित स्वचालित परीक्षण सेटअप विकसित करने पर उनके काम के लिए उन्हें कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। वे वर्तमान में सुपरकंडक्टिंग सिंगल-फोटॉन डिवाइस और उनकी मैट्रोलोजी विकसित करने पर काम कर रहे हैं। यह क्वांटम सूचना विज्ञान और प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में अनुकूलन और मानकीकरण में सहायता करेगा।

महानिदेशक, सीएसआईआर का सीएसआईआर-आईएचबीटी में संबोधन

डा. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने सीएसआईआर–आईएचबीटी के वैज्ञानिकों, कार्मिकों एवं शोधार्थियों को दिनांक 30 अक्तूबर 2022 को संबोधित किया। उल्लेखनीय है कि डा. एन. कलैसेल्वी, सीएसआईआर के निदेशकों की दो दिवसीय सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए सीएसआईआर–आईएचबीटी पालमपुर के दौरे पर आयी हुई हैं।

अपने संबोधन में डा. एन. कलैसेल्वी ने संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध एवं

विकास कार्यों की उपलब्धियों के लिए उनके समर्पण, ऊर्जा एवं लगन के लिए सभी स्टाफ सदस्यों की सराहना की। विज्ञान के हर क्षेत्र में संस्थान ने सराहनीय कार्य किया है। यह सब कुशल नेतृत्व एवं टीम भावना के माध्यम से साकार हुआ है। सीएसआईआर–आईएचबीटी एक ऐसा श्रेष्ठ संस्थान है जहां विज्ञान के संपूर्ण पैकेज के साथ प्रत्येक कार्य सुव्यवस्थित हैं। उन्होंने आगे बताया कि विज्ञान के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं और हम मूल्यवर्धन के माध्यम से देश की आर्थिकी को सुदृढ़ कर वैश्विक स्तर पर भारत को अग्रणी देशों की श्रेणी में ला सकते हैं। शोधार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि 21वीं सदी भारत की है और कुशल नेतृत्व के माध्यम से हमें अपने सच्चे प्रयासों, आइडिया, सकारात्मक ऊर्जा के साथ देश को समर्थ, सक्षम एवं खुशहाल बनाने में अपना योगदान देना होगा।

इससे पूर्व संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने डा. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर का स्वागत करते हुए सीएसआईआर को अग्रणी विज्ञान संस्था बनाने के लिए टीम सीएसआईआर–आईएचबीटी के पूर्ण सहयोग की प्रतिबद्धता दोहराई।

सीएसआईआर-निस्पर ने “हमारी विरासत : भारतीय पारंपरिक ज्ञान” पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया

सीएसआईआर-निस्पर और केंप (नॉलेज एंड अवेयरनेस मैपिंग प्लेटफॉर्म) के सहयोग से जूम मीटिंग के माध्यम से गुरुवार, 13 अक्टूबर 2022 को ''हमारी विरासतः भारतीय पारंपरिक ज्ञान'' पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें भारत भर के विभिन्न स्कूलों के 5वीं से 12वीं कक्षा के 600 छात्र प्रतिभागियों के रूप में शामिल हुए। कैम्प (नॉलेज एंड अवेयरनेस मैपिंग प्लेटफॉर्म) काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआईआर) नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्युनिकेशन एंड पॉलिसी रिसर्च (निस्पर) और इंडस्ट्रियल पार्टनर M/S Nysa Communications Pvt Ltd. (एनसीपीएल) का एक इनिशिएटिव एंड नॉलेज एलायंस है कैम्प की पाक्षिक कार्यशालाओं का उद्देश्य छात्रों की रचनात्मकता, सार्थक सीखने और महत्वपूर्ण पढ़ने और सोचने के कौशल विकसित करने में मदद करना है जो

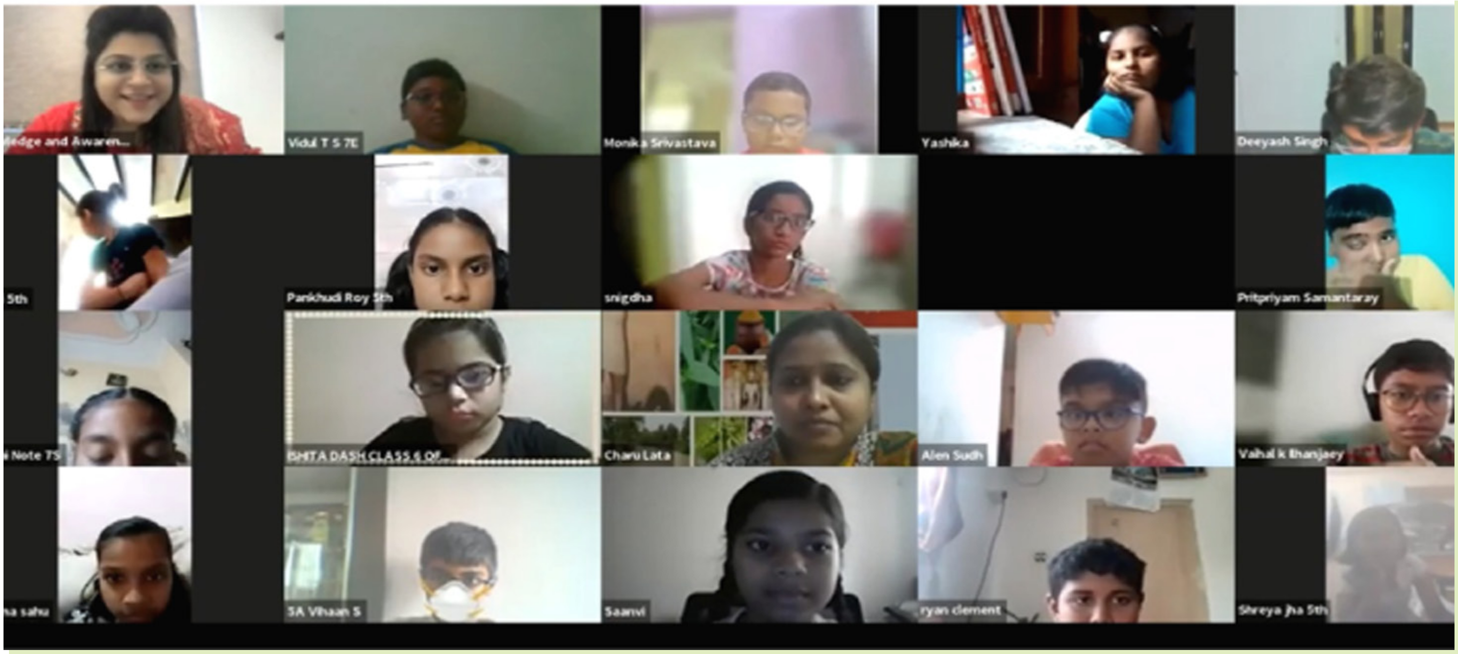

छात्रों की अंतर्निहित क्षमताओं को सामने लाते हैं। कैम्प का दृष्टिकोण भारत को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मानविकी के क्षेत्र में एक वैश्विक नेता बनाने के लिए छात्रों में वैज्ञानिक और तकनीकी स्वभाव की पहचान करना और उसे प्रोन्नत करना है।

सत्र का आयोजन कैम्प योजना और निगरानी समिति की सदस्य सुश्री एरिका माथुर द्वारा किया गया था और मुख्य वक्ता डॉ. चारु लता, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर–निस्पर थीं। वे इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज एंड इंडियन साइंस एब्स्ट्रैक्ट्स की संपादक भी हैं। डॉ लता ''भारत के वैज्ञानिक रूप से मान्य पारंपरिक ज्ञान को समाज में संचार'' पर राष्ट्रीय पहल स्वस्तिक का नेतृत्व कर रही हैं।

डॉ लता ने छात्रों को बताया कि युवा पीढ़ी को हमारे गौरवशाली अतीत के बारे में जानना बहुत जरूरी है जोकि हमारी समृद्ध विरासत की नींव है। यह युवा दिमागों के लिए सही समय है कि वे राष्ट्र निर्माण के लिए हमारे देश की पिछली उपलब्धियों पर ध्यान दें, जो कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और तर्क का युग था। अपनी प्रस्तुति के माध्यम से, डॉ. चारु लता ने कला, कृषि, वास्तुकला, खगोल विज्ञान, गणित, धातु विज्ञान, खाद्य प्रसंस्करण, आयुर्वेद और योग, सिविल इंजीनियरिंग, चिकित्सा और शल्य चिकित्सा, शिक्षा और दर्शन जैसे हमारे पारंपरिक ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का पता लगाया, जो और सदियों पहले भी प्रगतिशील थे तथा अत्यधिक वैज्ञानिक थे ।

डॉ चारु लता ने समझाया कि प्राचीन भारत में शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षण को एक महान पेशा माना जाता था और छात्रों को अपने साथियों और शिक्षकों के साथ आश्रमों या गुरुकुलों में रहना होता था। नालंदा (वर्तमान राजगीर, बिहार में स्थित) और तक्षशिला उस युग के प्रख्यात विश्वविद्यालय थे।

गणितज्ञों की बात करें तो भारत में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, वराह मिहिरा, भास्कराचार्य और लीलावती जैसे महान प्राचीन गणितज्ञ थे, जिनका इस विषय में योगदान उल्लेखनीय है। भारत ने संख्या प्रणाली, ज्यामिति, त्रिकोणमिति, द्विपद प्रमेय, पाई का मान, कक्षीय काल, आकाशीय पिंडों के व्यास और वर्षों की संख्या में शून्य की अवधारणा की थी। भारतीय प्राचीन धातु विज्ञान के लेंस के माध्यम से देखने पर, कुतुब मीनार, दिल्ली में स्थित प्रसिद्ध लौह स्तंभ जैसे जंग रहित लोहा और 'अरनमुला दर्पण' जैसे धातु दर्पण उल्लेखनीय मामले थे। डॉ. चारु लता ने प्राचीन वास्तुकला के अगले भाग में रामप्पा मंदिर जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है, के विषय मे चर्चा की जो इस विषय का मुख्य आकर्षण था क्योंकि इसमें सैंडबॉक्स तकनीक और तैरती ईंटें जैसी विशेषताएं हैं जो इसे भूकंप प्रतिरोधी बनाती हैं।

इसी प्रकार, भारतीय चिकित्सा की प्राचीन शाखा आयुर्वेद, योग और शल्य चिकित्सा के जनक के रूप में जाने जाने वाले आचार्य सुश्रुत के योगदान ने शल्य चिकित्सा और स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में प्रगति के उच्चतम रूप का प्रदर्शन किया।

इतना ही नहीं पारंपरिक भारतीय खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ जैसे केरल के ओणम साधम' उत्कृष्ट थे, जिसमें 26

अलग–अलग खाद्य पदार्थ होते थे, जिन्हें केले के पत्ते पर परोसा जाता था, तथा वे जीभ की सभी स्वाद ग्रन्थियों को उत्तेजित करता था, 'पोइता भात, एक पारंपरिक भोजन देश के पूर्वोत्तर हिस्सों से जहां बचे हुए पके चावल को पौष्टिक भोजन बनानें के लिए रात भर किण्वित किया जाता है और 'कश्मीरी कहवा' जो जड़ी–बूटियों का मिश्रण है और एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर है, इसके कुछ उदाहरण थे। उन्होंने छात्रों को ब्रान्च वेंडिंग जैसी स्वदेशी कृषि पद्धतियों के बारे में समझाया (और हमारे पूर्वजों द्वारा बाढ़ प्रतिरोधी धान की किस्म 'सांबा मोसनम' का उपयोग करना) तमिलनाडु की विश्व प्रसिद्ध कांचीवरम सिल्क साड़ियों के माध्यम से भी भारतीय वस्त्रों की समृद्ध विरासत पर चर्चा की गई। बेपोर, केरेला की उरु जहाज निर्माण परंपरा को उन छात्रों के लिए पेश किया गया था जहां पारंपरिक रूप से विशाल जहाजों को स्थानीय रूप से उपलब्ध वन लकड़ी से बनाया जाता था जो लंबे समय तक समुद्र का सामना कर सकते थे। तेल और इत्र खंड में, पोषक तत्व–अक्षुण्ण कोल्ड प्रेस्ड तेल प्राप्त करने के लिए पशु शक्ति का उपयोग करते हुए तेल प्रेस प्रौद्योगिकी के पारंपरिक तरीके और पारंपरिक कन्नौज, 'अत्तर' को डॉ. लता द्वारा विस्तार से समझाया गया।

चन्नापटना खिलौनों का एक उदाहरण, जो पारंपरिक लकड़ी के खिलौने थे, का भी उनकी बात में उल्लेख किया जिसमें मोबाइल उपयोग के दुष्प्रभावों का उल्लेख किया गया था क्योंकि यह पर्यावरण में बहुत अधिक ई–कचरा उत्पन्न करता है।

डॉ. चारु लता ने सीएसआईआर -निस्पर द्वारा राष्ट्रीय पहल स्वस्तिक को संक्षेप में समझाया, जो उस युग की शुरुआत का प्रतीक है जहां वैज्ञानिक रूप से मान्य भारतीय पारंपरिक ज्ञान को वर्तमान पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाया जा रहा है तथा जो दस्तावेजीकरण की कमी पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभाव, विदेशी आक्रमण और विश्व के वैश्वीकरण के कारण खो गया था, इस खोए हुए ज्ञान को पुनर्जीवित करना और अखंडता के साथ इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है क्योंकि राष्ट्र निर्माण सभी का कर्तव्य है।

सत्र का समापन बच्चों द्वारा प्रश्न-उत्तर सत्र और के कैम्प के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई ने मनाया सीएसआईआर का 81 वां स्थापना दिवस

भावनगर स्थित वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की घटक प्रयोगशाला केन्द्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई) में सीएसआईआर का 81वां स्थापना दिवस

13 अक्तूबर को धूमधाम से मनाया गया। सीएसआईआर को विभिन्न विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में निदान से लेकर दवाओं तक, स्वच्छता से स्वास्थ्य तक, ऊर्जा से पर्यावरण तक, स्वास्थ्य पेय से लेकर पीने के पानी तक, घर से उद्योग तक, धमनी से लेकर उद्योग तक तथा हवाई जहाज और औद्योगिक कचरे से लेकर धन तक अत्याधुनिक अनुसंधान और विकास ज्ञान आधार के लिए जाना जाता है।

अखिल भारतीय उपस्थिति के साथ, सीएसआईआर के पास कई राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, आउटरीच केंद्रों, नवाचार परिसरों और इकाइयों का एक गतिशील नेटवर्क है। सीएसआईआर –सीएसएमसीआरआई, गुजरात राज्य का एकमात्र संस्थान है जो सीएसआईआर, नई दिल्ली के तत्वावधान में काम करता है। पूरे दिन चले इस कार्यक्रम में पूर्वाह्न में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में भावनगर के विभिन्न विद्यालयों के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए संस्थान में वैज्ञानिक–शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया।

छात्रों ने रिवर्स ओस्मोसिस बस, समुद्री शैवाल खेती करना व उनका उपयोग, वर्कशॉप व नमक उत्पादन तकनीकी तथा ऊतक संवर्धन (टिशू कल्चर) के सिद्धांत व उपयोगों के बारे में उत्साह से जानकारी प्राप्त की।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पीआरओ डॉ. कांति भूषण पाण्डेय ने कहा कि महानिदेशक सीएसआईआर डॉ. एन कलैसेल्वी के निर्देशानुसार छात्रों में विज्ञान के प्रति अभिरूचि पैदा करने के उद्देश्य से संस्थान की विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों से उन्हे अवगत कराया गया।

अपराह्न में मुख्य अतिथि प्रो. अनिरुद्ध भालचन्द्र पंडित, कुलपति, आईसीटी मुंबई द्वारा स्थापना दिवस विषयक व्याख्यान दिया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. कन्नन श्रीनिवासन ने अपने सम्बोधन में कहा कि किसी भी संस्थान की प्रगति उसके कर्मचारियों पर निर्भर है।

उन्होने स्थापना कार्यक्रम के अवसर पर सीएसआईआर को विश्व की अग्रणी संस्था बनाने का आह्वान किया। इस दौरान संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन 2021–22 का विमोचन भी किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विश्वजीत गांगुली द्वारा और समापन प्रशासन नियंत्रक श्री सुभाष चंद्र द्वारा किया गया।

‘विजन राजस्थान 2022’ में सीएसआईआर ने जीती ‘बेस्ट एग्जिबिटर’ ट्राफी

100 से अधिक संस्थाओं ने अपने उत्पादों का किया प्रदर्शन, जनप्रतिनिधियों व छात्र–छात्राओं ने की सराहना

सीएसआईआर–सीरी ने राजस्थान सरकार द्वारा सिरोही में आयोजित ‘विजन राजस्थान 2022’ प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी में भाग लिया। संस्थान ने राजस्थान की झलक दिखाती हुई इस प्रदर्शनी में अपनी कुछ प्रमुख प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया। पिलानी स्थित सीएसआईआर–सीरी और हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में स्थित सीएसआईआर–आईएचबीटी ने इस आयोजन में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का प्रतिनिधित्व किया। प्रदर्शनी में 100 से अधिक प्रदर्शकों ने अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया और 7000 से अधिक स्कूली छात्र–छात्राओं ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इसके अतिरिक्त पटेल, श्री देवजी मानसिंगराम, लोकसभा सांसद एवं जनप्रतिनिधियों सहित उद्योग और शिक्षा जगत के गणमान्य व्यक्तियों ने भी विजन राजस्थान 2022 का दौरा किया।

टीम सीएसआईआर ने आर एंड डी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक (बेस्ट एग्जिबिटर) का पुरस्कार जीता।

माननीय सांसद पटेल, श्री देवजी मानसिंगराम ने टीम सीएसआईआर को पुरस्कार प्रदान किया।

सीएसआईआर–सीरी के डॉ विजय चटर्जी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं श्री ज्ञान सिंह मीणा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने यह पुरस्कार प्राप्त किया।

माननीय सांसद ने सीएसआईआर के वैज्ञानिकों द्वारा आम लोगों के जीवन के उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। प्रदर्शनी में आगंतुक सांसद, अन्य जनप्रतिनिधियों व अतिथियों को दूध में मिलावट एवं गुणवत्ता मापन के लिए विकसित क्षीर स्कैनलाइजर टेक्नोलॉजी, शहद मे मिलावट का पता लगाने के लिए विकसित ‘हनी एडल्टरेशन डिटेक्शन टेक्नोलॉजी’ और एलईडी टेक्नोलॉजी के अलावा सीएसआईआर–सीरी द्वारा बनाए जा रहे विभिन्न सेंसरों के बारे में जानकारी दी गई।

प्रदर्शनी में सीएसआईआर टीम का प्रतिनिधित्व कर रहे डॉ विजय चटर्जी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीरी ने जालोर–सिरोही के सांसद श्री देव जी पटेल को संस्थान द्वारा आरंभ किए गए ‘विज्ञान गाँव की ओर’ कार्यक्रम से भी अवगत कराया। माननीय सांसद श्री देवजी पटेल ने इस कार्यक्रम के लिए संस्थान के निदेशक डॉ पंचारिया की दूरदर्शिता की सराहना की।

संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने सीरी टीम का प्रतिनिधित्व करने वाले वैज्ञानिक डॉ विजय चटर्जी एवं ज्ञान सिंह मीणा की सराहना की तथा बेस्ट एग्जिबिटर ट्रॉफी जीतने के लिए टीम सीएसआईआर को बधाई दी।

संस्थान में आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में मुख्य वैज्ञानिक डॉ अभिजीत कर्माकर, पीएमईबीडी प्रमुख, डॉ प्रमोद तँवर सहित अन्य सहकर्मी उपस्थित थे।

सीएसआईआर-सीरी में 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रमों के क्रम में 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0' का आयोजन

देशवासियों को स्वास्थ्य के संबंध में जागरूक करने और इस संबंध में बेहतर आदतें अपनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्यं से भारत सरकार के युवा मामलों एवं खेल मंत्रालय द्वारा स्वतंत्रता दिवस और गाँधी जयंती दो महत्ववपूर्ण दिनों को समारोहपूर्वक मनाने के लिए वर्ष 2020 में 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' आरंभ की गई थी। सीएसआईआर मुख्यालय के दिशानिर्देशानुसार सीएसआईआर–सीरी, पिलानी में 2 अक्टूबर से 31 अक्टूबर, 2022 (गाँधी जयंती एवं सरदार पटेल जयंती) के बीच की अवधि के दौरान 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0' कार्यक्रम श्रृंखला आयोजित की गई। इसके अंतर्गत संस्थान परिसर के अलावा, सीरी विद्या मंदिर एवं कॉलोनी परिसर में 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' एवं प्लॉफग रन (जॉगिंग करते हुए स्वच्छता कार्य करना) आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया सहित, आयोजन के नोडल अधिकारी श्री महेन्द्र सिंह, प्रशासनिक अधिकारी एवं अन्य सहकर्मियों के अलावा सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कॉलोनीवासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ गाँधी व शास्त्री जयंती पर 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' शपथ से हुआ। डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर–सीरी ने कॉलोनी परिसर में स्थित नेहरू पार्क में सभी उपस्थित सहकर्मियों एवं उनके परिजनों को शपथ दिलाई।

डॉ पंचारिया ने स्वास्थ्य को मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ पूँजी बताते हुए कहा कि हमें प्रतिदिन कुछ समय शारीरिक श्रम में लगाना चाहिए। शपथ के उपरांत डॉ पी सी पंचारिया के नेतृत्व में सभी उपस्थित सहकर्मियों व कॉलोनीवासियों ने लगभग 2 कि.मी. तक दौड़ लगाई।

दिनांक 3 अक्टूबर 2022 को सहकर्मी सायं 5 बजे सीरी टॉवर के निकट एकत्र हुए और डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर–सीरी के नेतृत्व में संस्थान परिसर में लगभग 1 कि.मी. की दौड़ (जॉगिंग) लगाई।

27 अक्टूबर, 2022 को सीरी विद्या मंदिर के आचार्य श्री पवन शेखावत के सहयोग से सीरी कॉलोनी के एवं अन्य बच्चों ने संस्थान के वैज्ञानिकों एवं अन्य साथियों के साथ लगभग 1.5 कि.मी. फ्रीडम रन में प्रतिभागिता की।

28 अक्टूबर 2022, फ्रीडम रन कार्यक्रम

के अंतर्गत 28 अक्टूबर का दिन सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों को समर्पित था। इस दिन विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती बी. राशेल की अध्यक्षता में फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0 में 400 मी. दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के अंतर्गत कक्षा 6 से 9 तक के 210 विद्यार्थियों ने कुल चार वर्गों में प्रतिभागिता की। विजेताओं को डॉ सुचंदन पाल, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीरी ने प्रमाण पत्र भेंट किए। प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं समन्वयन सीरी विद्या मंदिर के अध्यापकों श्री वीरेन्द्र सिंह राठौड़ और श्री पवन शेखावत ने किया।

इसके अलावा संस्थान में आयोजित 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0' कार्यक्रम के अंतर्गत कॉलोनीवासियों ने भी अपनी सुविधानुसार सहभागिता की।

इस प्रकार सीएसआईआर–सीरी में 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0' कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान तिरुवनंतपुरम ने हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया

संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। इसी उद्देश्य के पूर्ति हेतु पहली बार हिन्दी सप्ताह के स्थान पर राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा 14 से 29 सितंबर 2022 के दौरान हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

संस्थान के कर्मचारी गण, अनुसंधान छात्र/परियोजना स्टाफ तथा स्टाफ सदस्य के स्कूल जाने वाले बच्चों के लाभार्थ विभिन्न कार्यक्रम/प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए कार्यक्रम समन्वयक को सौंपा गया। संस्थान में हिंदी को बढ़ावा देने एवं अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रूचि सृजित करने के उद्देश्य से इस पखवाड़ा के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे: हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, अंताक्षरी, एकल गीत एवं देशभक्ति गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

सर्वप्रथम प्रतियोगिता डॉ. रवि शंकर एल के नेतृत्व में हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर तकनीकी प्रस्तुति प्रतियोगिता रखी गयी। प्रतियोगिता में संस्थान के छात्रों सहित वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

दिनांक 14.09.2022, 19.09.2022, 23.09.2022 और 29.09.2022 को संस्थान में आधिकारिक सम्प्रेषण में हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी भाषी दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान में अधिकतर हिन्दी में पत्राचार एवं टिप्पणी करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

संस्थान ने कर्मचारियों एवं शोधार्थियों के लिए 15.09.2022 को हिन्दी पहेली का आयोजन किया ताकि राजभाषा के प्रचार–प्रसार को एक नई दिशा मिलें। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. बिनोद परमेश्वरन, प्रधान वैज्ञानिक के संरक्षण में किया गया।

दिनांक 16.09.2022 को हिन्दी पखवाड़ा

समारोह का औपचारिक उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ आशिष लेले ने दीप जलाकर किया। कार्यक्रम की शुरुआत में, हिन्दी पखवाड़ा समारोह के अध्यक्ष डॉ. के वी राधाकृष्णन ने सभी का स्वागत किया और कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ आशिष लेले ने संस्थान में अनुपालन की राजभाषा नीतियों की जानकारी दी और संस्थान की प्रतिबद्धता पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने उपस्थित कर्मचारियों को अधिकाधिक काम हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित किया और हिंदी दिवस के अनुपालन संबंधी पहलुओं पर उजागर किया। साथ ही उन्होंने संस्थान के छात्रों की रचनाशीलता एवं उत्प्रेरक विचारों की सराहना की।

किताब मनुष्य के जीवन के लिए एक अच्छे दोस्त की तरह भूमिका निभाती है। विद्यार्थी के जीवन में भी पुस्तक का बहुत ही ज्यादा महत्व होता है। पुस्तकों का महत्व बढ़ाने एवं पुस्तकालय में मौजूद विज्ञान संबन्धित नवागत प्रकाशनों का परिचय कराने हेतु दिनांक 16.09.2022 को ज्ञान संस्थान केंद्र द्वारा हिन्दी पुस्तक प्रदर्शन रखा गया।

हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने में गानों का ज्यादा प्रभाव रहा है, खासकर पुराने गाने। दिनांक 16.09.2022 को संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों/अनुसंधान छात्र/परियोजना स्टाफ के लिए सलिल चौधरी के गानों पर एकल गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संस्थान के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (2) श्री जेडी जोश के नेतृत्व में यह प्रतियोगिता रखी गयी थी।

दिनांक 19.09.2022 को संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों/अनुसंधान छात्र/परियोजना स्टाफ के लिए "भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड 19 का प्रभाव" विषय पर डॉ जोशी जॉर्ज के भव्य आयोजन में हिंदी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। और उसी दिन स्टाफ सदस्य के बच्चों के लिए हिन्दी पाठ एवं देश भक्ति गीत प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

पढ़ने की आदत शब्द भंडार को समृद्ध करती हैं। दिनांक 20.09.2022 को डॉ अच्चु चंद्रन के संचालन में हिन्दी पठन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अधिकारियों/कर्मचारियों/अनुसंधान छात्र/परियोजना स्टाफ सदस्यों को हिन्दी भाषा में अभिव्यक्त भाव तथा विचारों को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ।

अंताक्षरी ज्ञान क्रीड़ा भी है और कला भी। इसका आधार प्रेरणा, स्मरणशक्ति, आदि है। खेलते–खेलते वह बढ़ जाती है और मस्तिष्क की शोध–संदर्भ–क्षमता तेज हो जाती है। अतः पखवाड़े के पांचवे दिन समन्वयक डॉ राखी आर बी, प्रधान वैज्ञानिक के नेतृत्व में इस ज्ञान क्रीड़ा का आयोजन किया गया।

दिनांक 22.09.2022 को "सरकारों की मुफ्त सार्वजनिक सुविधा की नीति सही या गलत" विषय पर हिंदी पक्ष–विपक्ष प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्रतियोगिता में डॉ तृप्ति मिश्रा एवं डॉ के सी शर्मा जी ने अहम भूमिका निभाई है। भागीदारों के दो समूह बनाकर संवाद कराया गया। इनके बीच बड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली।

दिनांक 23.09.2022 को संस्थान के सभी सदस्यों के लिए 'तस्वीर क्या कहती है' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रस्तुत चित्र सभी को मेल द्वारा अग्रेषित किया गया और निश्चित समय के भीतर 100 शब्दों में लेख लिखने को कहा गया था। इस प्रतियोगिता में सबसे ज्यादा भागीदारी दिखाई दी।

दिनांक 26.09.2022 को डॉ वसंत राघवन, डॉ अक्षय दिलीप शिंदे जी एवं श्रीमती सौमिनी मैथ्यू के भव्य आयोजन में पिक्षनरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भागीदारों को उचित संख्या में टीमों में विभाजित किया गया। जहां टीम के एक सदस्य को लॉट से कार्ड (हिन्दी शब्द) लेने की अनुमति है। कार्ड पर उल्लिखित शब्द के आधार पर व्हाइट बोर्ड पर 1 मिनट के अंतर

चित्र बनाकर अपने टीम को समझाना है। जो आगे चलकर हिन्दी सिनेमा और अन्य शब्द दिया जाता है। यह खेल बहुत ही मजेदार रहा।

दिनांक 27.09.2022 को डॉ राखी आर बी के नेतृत्व में स्टाफ सदस्य के बच्चों के लिए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। और उसी दिन 'राजा बोल रहा है' प्रतियोगिता भी रखा गया जिसमें छोटे बच्चों को समन्वयक द्वारा निर्देशित हिन्दी शब्दों को सुनकर वह करना है, जैसेः राजा बोल रहा है लाल रंग पकड़ो। दिनांक 28.09.2022 को 1970–1990 तक के पुराने गानों पर एकल गीत प्रतियोगिता आयोजित किया गया। 29.09.2022 को हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह और पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन विधिवत रूप से अतिथि के पुष्पगुच्छ के साथ हुआ। समापन समारोह का आरंभ संस्थान के कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी पखवाड़ा के संयोजक डॉ आशा जी नायर के स्वागत भाषण से हुआ।

समारोह की अध्यक्षता प्रभारी निदेशक डॉ. एस सावित्री ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने भाषा के महत्व को बताया। उन्होंने आगे कहा कि हम सभी को हिन्दी में अपने कार्यालयीन कार्य में बढोतरी करने की आवश्यकता है। जो अभी कर रहे है उसे आगे बढाए और जो नहीं कर रहे है वे शुरुआत करें, एक बार शुरु करेंगे तो कार्य

अपने आप गति पकडेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. निशि पी ने संस्थान में अनुपालन की राजभाषा नीतियों की जानकारी दी और संस्थान की प्रतिबद्धता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने उपस्थित कर्मचारियों को अधिकाधिक काम हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में सम्मानीय अतिथि के रूप में उपस्थित श्री संजय कुमार, अध्यक्ष आरआरबी ने राजभाषा एकक द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की और हिंदी दिवस के अनुपालन संबंधी पहलुओं पर उजागर किया। साथ ही उन्होंने कर्मचारियों का राजभाषा हिन्दीं के प्रति उत्तरदायित्व के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। तत्पश्चात मुख्य अतिथि महोदय ने अपने कर–कमलों से हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियागिताओं में सफल प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किए। एमआईएस के माध्यम से हर दिन अंग्रेजी अर्थ के साथ हिंदी में एक शब्द प्रदर्शित किया जाता है इस आधार पर प्रत्येक तिमाही के अंत में हिंदी शब्दावली परीक्षा आयोजित की जाती है इस अवसर पर विजेताओं को नकद पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम का समापन हिन्दी पखवाड़ा आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. के वी राधाकृष्णन के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। हिन्दी पखवाड़ा की उत्तम एवं सारगर्भित ढंग से व्यवस्था करने में अध्यक्ष महोदय का बड़ा हाथ है। उन्होंने हिन्दी पखवाडे की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। साथ ही कहा कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी कर्मचारियों को अपना योगदान देना होगा। इस समारोह में संस्थोन के मुख्य वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी श्री अंटोनी पीटर राजा एस, वित्त एवं लेखा अधिकारी डॉ सोमू रॉय, भंडार एवं क्रय अधिकारी श्री के टी जाधव तथा अन्य कर्मचारीगण उपस्थित थे। अंत में राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

NIScPR
सीएसआईआर–निस्पर

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री मुकेश पुंड द्वारा स्वामी राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर)
डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली–110012 से प्रकाशित एवं मुद्रित

संपादकः अनिल कुमार श्रीवास्तव, सहायक संपादकः मीनाक्षी गौड़, अनुवादः अनिरुद्ध तिवारी,
प्रोडक्शनः अश्वनी कुमार ब्राह्मी,
फोनः 25841769, 25846304–7/371; फैक्सः 25847062; ईमेलः csirsamachar@niscpr.res.in; वेबसाइटः http://www.niscpr.res.in
बिक्री एवं वितरण अधिकारी, निस्पर; ईमेलः sales@niscpr.res.in; फोनः 011-25843359
वार्षिक सदस्यताः ₹ 500/– एक अंकः ₹ 50/–

DELHIN / 2013/52141